वसंत

भाग 2

कक्षा 7 के लिए

हिंदी की पाठ्यपुस्तक

वसंत

भाग 2

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मार्च 2007 चैत्र 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 कार्तिक 1929
दिसंबर 2008 मार्गशीर्ष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 420 T MK

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, डी 29, इंडस्ट्रियल एरिया, साईट 'ए', मथुरा (उ.प्र.) से मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रोनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*पेय्येटि राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
संपादक	:	*मीरा कांत*
उत्पादन सहायक	:	*सुनील कुमार*

आवरण
अरविंदर चावला

सज्जा
अरविंदर चावला
जोएल गिल

चित्रांकन
भूषण शालिग्राम
विप्लव शशि
जोएल गिल

तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक द
तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध
है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न
में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के
उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है।
कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और वि
छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियो
प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपु
निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। प
भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तव
मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है।
पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को
बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं
संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगिय
मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च
विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रो
जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी
सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद दे
व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति स
एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे
संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधा
प्रशिक्षण

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

कमलानंद झा, हिंदी विभाग, सी.एन. कॉलेज, दरभंगा, बिहार

करुणा शर्मा, *पूर्व पी.जी.टी.* (हिंदी), ई-68, ईस्ट अंसारी नगर, एम्स, नयी दिल्ली

नूतन झा, *अध्यापिका,* मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली

प्रभात कुमार झा, अंकुर, सर्वप्रिय विहार, नयी दिल्ली

प्रेमपाल शर्मा, 96 कला विहार, मयूर विहार, फ़ेज़-1, दिल्ली

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्राध्यापिका,* मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राम गोपाल वर्मा, डी.पी.एस., आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली

रामचंद्र, *वरिष्ठ प्रवक्ता* (हिंदी), भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

सुशील शुक्ल, एकलव्य, अरेरा कालोनी, भोपाल, मध्य प्रदेश

सदस्य समन्वयक

प्रमोद कुमार दुबे, *प्रवक्ता,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलि
किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन-संस्थाओं त
अकादमिक सहयोग के लिए शारदा कुमारी और नीलकंठ के प्रति परिषद् आभ
व्यक्त करती है।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेश
(भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* जय प्रकाश रा
कमलेश आर्य, सचिन कुमार, कमल कुमार और अरविंद शर्मा; *कॉपी एडी*
राम जी तिवारी और सुप्रिया गुप्ता तथा *प्रूफ़ रीडर* आशीष मणि त्रिपाठी, कं
शर्मा और अनामिका गोविल की आभारी है।

शिक्षक से

यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्यसामग्री का चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। कई प्रश्न-अभ्यास भाषा शिक्षण की परिचित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि में विद्यार्थी की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। पाठ केंद्रित प्रश्नों को क्रमशः विस्तार देते हुए पाठ के आसपास के ज्ञान-क्षेत्रों को भी दूसरे प्रश्न-समूहों में साथ रखने का प्रयास किया गया है। भाषा की बात करते हुए ऐसे शब्दों और प्रयोगों पर विद्यार्थी का ध्यान दिलाया गया है जिन्हें समाज की जीवंतता को साहित्यिक कृतियों में समेटते हुए साहित्यकार अपनी कृति में रखना आवश्यक समझते हैं और अकसर ऐसे आंचलिक शब्द और वाक्य प्रयोग आज के शहरी जीवन में अपेक्षाकृत कम सुनाई पड़ते हैं।

नयी कविता से पठन-पाठन का रिश्ता जोड़ने का प्रयास किया है। कई बार शिक्षकों में भी पारंपरिक शैक्षणिक पैमाने की दृष्टि के कारण नयी कविता को कुछ अटपटा मानने की प्रवृत्ति रही है। इससे साहित्य की समग्रता के प्रति विद्यार्थी की रुचि को बढ़ाने में हम सफल नहीं हो पाते। नयी कविता को पाठ्यपुस्तक में स्थान देते हुए कविता के सामान्य अर्थ को खोलने का प्रयास किया गया है और प्रश्न भी इस अंदाज़ से रखे गए हैं कि कविता से विद्यार्थी जुड़ सके। अंततः कोई भी भाषा-पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी जब वह बच्चों को साहित्य की धरोहर और आज लिखे जा रहे साहित्य के प्रति भी उत्सुक बनाए।

हिंदी के प्रचलित विभिन्न रूप और उसकी बोलियाँ भी इसकी धरोहर का अंग हैं और उस लोक का निर्माण करती हैं जिसमें हिंदी फलती-फूलती रही है। विभिन्न पाठों में यत्र-तत्र प्रयोग में आए हिंदी के प्रचलित रूपों और बोलियों का ज्ञान संसाधन के रूप में शिक्षक इस्तेमाल करें और बच्चों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें तो हिंदी की इस विस्तृत लोक निधि के प्रति आदर और उत्साह का संस्कार विकसित होगा।

इस पाठ्यपुस्तक में **बहुभाषिकता** की झलक अनेक रूपों में मिलती है। भ
वैज्ञानिक दृष्टि से सरल रूप में तैयार किए गए प्रश्न विद्यार्थी को उत्सुक कर सकें
शब्दों के मूल न केवल शब्दों के अर्थ को खोलते हैं, बल्कि विभिन्न भाषाओं
आपसी संबंधों को भी दिखाते हैं। संधिविच्छेद आदि के द्वारा शब्दों के मूलरूप
धातु के ज्ञान से शब्द परिवार और शब्द के विभिन्न अर्थों की जानकारी मिलती
साथ ही विभिन्न भाषाओं के आपसी संबंध और निकटता का भी पता चलता
पाठ्यपुस्तक में ही **व्याकरण** की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्य
दिए गए हैं, इसलिए अलग से व्याकरण की कोई पुस्तक नहीं दी जा रही है। आ
है ऐसे अभ्यासों के द्वारा विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित होगी और बिना
ही उनमें भाषायी कौशलों का विकास होगा।

इसे ध्यान में रखकर इस किताब में विद्यार्थी की **स्वाभाविक अभिव्यक्ति**
कल्पनाशीलता, **कौशल** और **सोच** को आसपास के परिवेश में ही विकसित क
हेतु विद्यार्थी की सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देनेवाले अभ्यास दिए गए
अनुमान और कल्पना तथा **कुछ करने को** भी इसी उद्देश्य से दिए गए हैं। विद्या
शिक्षकों के सहयोग से अतिरिक्त अभ्यासों को पूरा कर सकते हैं। कुछ सामग्रि
केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं जो कहीं तो पाठ के विषय को पोषित करती हैं औ
कहीं रचना की विविधता प्रस्तुत कर विद्यार्थी की रुचि का विस्तार करती हैं। **फूल**
कदंब, **फेरीवालों की आवाज़ें** आदि इसी के नमूने हैं। शिक्षकों से आशा है कि
पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करेंगे
अपनी ओर से भी कुछ अभ्यास-कार्य व आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा में हाथों से की जानेवाली गतिविधियों, उसकी कला संबंधी दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन-जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है

पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त कुछ रोचक सामग्रियाँ दी गई हैं। इसी तरह पाठों के साथ विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली सामग्रियाँ भी रखी गई हैं। इन पाठ्यसामग्रियों का अंतर्संबंध अन्य शैक्षिक विषयों से बनता है और इनसे विद्यार्थी के संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। ❑

पाठ-सूची

आमुख iii

शिक्षक से vii

1. हम पंछी उन्मुक्त गगन के — कविता — 1
   शिवमंगल सिंह 'सुमन'

2. दादी माँ — कहानी — 4
   शिवप्रसाद सिंह

3. हिमालय की बेटियाँ — निबंध — 12
   नागार्जुन

   फूले कदंब (केवल पढ़ने के लिए) — 18
   नागार्जुन

4. कठपुतली — कविता — 19
   भवानीप्रसाद मिश्र

5. मिठाईवाला — कहानी — 22
   भगवतीप्रसाद वाजपेयी

   फेरीवालों की आवाज़ें (केवल पढ़ने के लिए) — 32

6. रक्त और हमारा शरीर — निबंध — 34
   यतीश अग्रवाल

7. पापा खो गए — नाटक (मराठी) — 42
   विजय तेंदुलकर

8. शाम-एक किसान — कविता — 63
   सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

9. चिड़िया की बच्ची — कहानी — 67
   जैनेंद्र कुमार

10. अपूर्व अनुभव — *संस्मरण (जापानी)* — 75
तेत्सुको कुरियानागी

11. रहीम के दोहे — *कविता* — 83
रहीम

12. कंचा — *कहानी (मलयालम)* — 86
टी.पद्मनाभन

13. एक तिनका — *कविता* — 99
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

14. खानपान की बदलती तसवीर — *निबंध* — 102
प्रयाग शुक्ल

15. नीलकंठ — *रेखाचित्र* — 108
महादेवी वर्मा

16. भोर और बरखा — *कविता* — 119
मीरा बाई

17. वीर कुँवर सिंह — *जीवनी* — 122
विभागीय

18. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया: धनराज — *साक्षात्कार* — 129
विनीता पाण्डेय

हमारी ख्वाहिश (केवल पढ़ने के लिए) — 135
रामप्रसाद 'बिस्मिल'

19. आश्रम का अनुमानित व्यय — *लेखा-जोखा* — 136
मोहनदास करमचंद गांधी

20. विप्लव-गायन — *कविता* — 141
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

शब्दकोश — 144

1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

□ *शिवमंगल सिंह 'सुमन'*

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?
2. पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?
3. भाव स्पष्ट कीजिए–
   या तो क्षितिज मिलन बन जाता / या तनती साँसों की डोरी।

कविता से आगे

1. बहुत से लोग पक्षी पालते हैं–
   (क) पक्षियों को पालना उचित है अथवा नहीं? अपने विचार लिखिए।
   (ख) क्या आपने या आपकी जानकारी में किसी ने कभी कोई पक्षी पाला है उसकी देखरेख किस प्रकार की जाती होगी, लिखिए।

2. पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आजादी का हनन ही नहीं होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है। इस विषय पर दस पंक्तियों में अपने विचार लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. क्या आपको लगता है कि मानव की वर्तमान जीवन-शैली और शहरीकरण से जुड़ी योजनाएँ पक्षियों के लिए घातक हैं? पक्षियों से रहित वातावरण में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए? उक्त विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. यदि आपके घर के किसी स्थान पर किसी पक्षी ने अपना आवास बनाया है और किसी कारणवश आपको अपना घर बदलना पड़ रहा है तो आप उस पक्षी के लिए किस तरह के प्रबंध करना आवश्यक समझेंगे? लिखिए।

भाषा की बात

1. स्वर्ण-शृंखला और लाल किरण-सी में रेखांकित शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। कविता से ढूँढ़कर इस प्रकार के तीन और उदाहरण लिखिए।
2. 'भूखे-प्यासे' में द्वंद्व समास है। इन दोनों शब्दों के बीच लगे चिह्न को सामासिक चिह्न (-) कहते हैं। इस चिह्न से 'और' का संकेत मिलता है, जैसे- भूखे-प्यासे=भूखे और प्यासे।
   - इस प्रकार के दस अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

दादी माँ 2

कमज़ोरी ही है अपनी, पर सच तो यह है कि ज़रा-सी कठिनाई पड़ते बीसों गरमी, बरसात और वसंत देखने के बाद भी, मेरा मन सदा नहीं तो प्रायः अनमना-सा हो जाता है। मेरे शुभचिंतक मित्र मुँह पर मुझे प्रसन्न करने के लिए आनेवाली छुट्टियों की सूचना देते हैं और पीठ पीछे मुझे कमज़ोर और ज़रा-सी प्रतिकूलता से घबरानेवाला कहकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं सोचता हूँ, 'अच्छा, अब कभी उन बातों को न सोचूँगा। ठीक है, जाने दो, सोचने से होता ही क्या है'। पर, बरबस मेरी आँखों के सामने शरद की शीत किरणों के समान स्वच्छ, शीतल किसी की धुँधली छाया नाच उठती है।

मुझे लगता है जैसे क्वार के दिन आ गए हैं। मेरे गाँव के चारों ओर पानी ही पानी हिलोरें ले रहा है। दूर के सिवान से बहकर आए हुए मोथा और सावाँ की अधगली घासें, घेऊर और बनप्याज की जड़ें तथा नाना प्रकार की बरसाती घासों के बीज, सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं। रास्तों में कीचड़ सूख गया है और गाँव के लड़के किनारों पर झागभरे जलाशयों में धमाके से कूद रहे हैं। अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं। आषाढ़ में आम और जामुन न मिलें, चिंता नहीं, अगहन में चिउड़ा और गुड़ न मिलें, दुख नहीं, चैत के दिनों में लाई के साथ गुड़

की पट्टी न मिले, अफ़सोस नहीं, पर क्वार के दिनों में इस गंधपूर्ण झागभरे जल में कूदना न हो तो बड़ा बुरा मालूम होता है। मैं भीतर हुड़क रहा था। दो-एक दिन ही तो कूद सका था, नहा-धोकर बीमार हो गया। हलकी बीमारी न जाने क्यों मुझे अच्छी लगती है। थोड़ा-थोड़ा ज्वर हो, सर में साधारण दर्द और खाने के लिए दिनभर नींबू और साबू। लेकिन इस बार ऐसी चीज़ नहीं थी। ज्वर जो चढ़ा तो चढ़ता ही गया। रज़ाई पर रज़ाई—और उतरा रात बारह बजे के बाद।

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आईं, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

दादी माँ को गँवई-गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास पहुँचतीं और वहाँ भी वही काम। हाथ छूना, माथा छूना, पेट छूना। फिर भूत से लेकर मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान विश्वास के साथ सुनातीं। महामारी और विशूचिका के दिनों में रोज़ सवेरे उठकर स्नान के बाद लवंग और गुड़-मिश्रित जलधार, गुग्गल और धूप। सफ़ाई कोई उनसे सीख ले। दवा में देर होती, मिश्री या शहद खत्म हो जाता, चादर या गिलाफ़ नहीं बदले जाते, तो वे जैसे पागल हो जातीं। बुखार तो मुझे अब भी आता है। नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर न जाने क्यों ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता!

किशन भैया की शादी ठीक हुई, दादी माँ के उत्साह और आनंद का क
कहना! दिनभर गायब रहतीं। सारा घर जैसे उन्होंने सर पर उठा लिया हो। पड़ोसि
आतीं। बहुत बुलाने पर दादी माँ आतीं, "बहिन बुरा न मानना। कार-परोजन द
घर ठहरा। एक काम अपने हाथ से न करूँ, तो होनेवाला नहीं।" जानने को
सभी जानते थे कि दादी माँ कुछ करतीं नहीं। पर किसी काम में उनक
अनुपस्थिति वस्तुतः विलंब का कारण बन जाती। उन्हीं दिनों की बात है। ए
दिन दोपहर को मैं घर लौटा। बाहरी निकसार में दादी माँ किसी पर बिगड़ र
थीं। देखा, पास के कोने में दुबकी रामी की चाची खड़ी है। "सो न होगा, धन
रुपये मय सूद के आज दे दे। तेरी आँख में तो शरम है नहीं। माँगने के समय कै
आई थी! पैरों पर नाक रगड़ती फिरी, किसी ने एक पाई भी न दी। अब लगी
आजकल करने-फसल में दूँगी, फसल में दूँगी...अब क्या तेरी खातिर दूस
फसल कटेगी?"

"दूँगी, मालकिन!" रामी की चाची रोती हुई, दोनों हाथों से आँचल पकड़े दादी माँ के पैरों की ओर झुकी, "बिटिया की शादी है। आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा!"

"हट, हट! अभी नहाके आ रही हूँ!" दादी माँ पीछे हट गईं।

"जाने दो दादी," मैंने इस अप्रिय प्रसंग को हटाने की गरज से कहा, "बेचारी गरीब है, दे देगी कभी।"

"चल, चल! चला है समझाने..."

मैं चुपके से आँगन की ओर चला गया। कई दिन बीत गए, मैं इस प्रसंग को एकदम भूल-सा गया। एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली। वह दादी को 'पूतों फलो दूधों नहाओ' का आशीर्वाद दे रही थी! मैंने पूछा, "क्या बात है, धन्नो चाची", तो उसने विह्वल होकर कहा, "उरिन हो गई बेटा, भगवान भला करे हमारी मालकिन का। कल ही आई थीं। पीछे का सभी रुपया छोड़ दिया, ऊपर से दस रुपये का नोट देकर बोलीं, 'देखना धन्नो, जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी, दस-पाँच के लिए हँसाई न हो।' देवता है बेटा, देवता।"

"उस रोज़ तो बहुत डाँट रही थीं?" मैंने पूछा।

"वह तो बड़े लोगों का काम है बाबू, रुपया देकर डाँटें भी न तो लाभ क्या!"

मैं मन-ही-मन इस तर्क पर हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

किशन के विवाह के दिनों की बात है। विवाह के चार-पाँच रोज़ पहले से ही औरतें रात-रातभर गीत गाती हैं। विवाह की रात को अभिनय भी होता है। यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते हैं—सभी पार्ट औरतें ही करती हैं। मैं बीमार होने के कारण बारात में न जा सका। मेरा ममेरा भाई राघव दालान में सो रहा था (वह भी बारात जाने के बाद पहुँचा था)। औरतों ने उस पर आपत्ति की।

दादी माँ बिगड़ीं, "लड़के से क्या परदा? लड़के और बरहा का मन एक-सा होता है।"

मुझे भी पास ही एक चारपाई पर चादर उढ़ाकर दादी माँ ने चुपके से
दिया था। बड़ी हँसी आ रही थी। सोचा, कहीं ज़ोर से हँस दूँ, भेद खुल जा
निकाल बाहर किया जाऊँगा, पर भाभी की बात पर हँसी रुक न सकी
भंडाफोड़ हो गया।

देबू की माँ ने चादर खींच ली, "कहो दादी, यह कौन बच्चा सोया है। ये
रोता है शायद, दूध तो पिला दूँ।" हाथापाई शुरू हुई। दादी माँ बिगड़ीं, "ल
से क्यों लगती है!"

सुबह रास्ते में देबू की माँ मिलीं, "कल वाला बच्चा, भाभी!" मैं वहाँ से
से भागा और दादी माँ के पास जा खड़ा हुआ। वस्तुतः किसी प्रकार का अप
हो जाने पर जब हम दादी माँ की छाया में खड़े हो जाते, अभयदान मिल ज

स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक-एक बात आज कैसी-वै
मालूम होती है। परिस्थितियों का वात्याचक्र जीवन को सूखे पत्ते-सा कैसा न
है, इसे दादी माँ खूब जानती थीं। दादा की मृत्यु के बाद से ही वे बहुत उ
रहतीं। संसार उन्हें धोखे की टट्टी मालूम होता। दादा ने उन्हें स्वयं जो धोखा दि
वे सदा उन्हें आगे भेजकर अपने पीछे जाने की झूठी बात कहा करते थे। दादा
मृत्यु के बाद कुकुरमुत्ते की तरह बढ़नेवाले, मुँह में राम बगल में छुरीवाले दो
की शुभचिंता ने स्थिति और भी डाँवाडोल कर दी। दादा के श्राद्ध में दादी माँ
मना करने पर भी पिता जी ने जो अतुल संपत्ति व्यय की, वह घर की तो थी न

दादी माँ अकसर उदास रहा करतीं। माघ के दिन थे। कड़ाके का जाड़ा
रहा था। पछुवा का सन्नाटा और पाले की शीत हड्डियों में घुसी पड़ती। शाम
मैंने देखा, दादी माँ गीली धोती पहने, कोनेवाले घर में एक संदूक पर दिया जला
हाथ जोड़कर बैठी हैं। उनकी स्नेह-कातर आँखों में मैंने आँसू कभी नहीं देखे
मैं बहुत देर तक मन मारे उनके पास बैठा रहा। उन्होंने आँखें खोलीं। "दादी माँ!
मैंने धीरे से कहा।

"क्या है रे, तू यहाँ क्यों बैठा है?"

"दादी माँ, एक बात पूछूँ, बताओगी न?" मैंने उनकी स्नेहपूर्ण आँखों
ओर देखा।

"क्या है, पूछ।"

"तुम रोती थीं?"

दादी माँ मुसकराईं, "पागल, तूने अभी-खाना भी नहीं खाया न, चल-चल!"

"धोती तो बदल लो, दादी माँ", मैंने कहा।

"मुझे सरदी-गरमी नहीं लगती बेटा।" वे मुझे खींचती रसोई में ले गईं।

सुबह मैंने देखा, चारपाई पर बैठे पिता जी और किशन भैया मन मारे कुछ सोच रहे हैं। "दूसरा चारा ही क्या है?" बाबू बोले, "रुपया कोई देता नहीं। कितने के तो अभी पिछले भी बाकी हैं!" वे रोने-रोने-से हो गए।

"रोता क्यों है रे!" दादी माँ ने उनका माथा सहलाते हुए कहा, "मैं तो अभी हूँ ही।" उन्होंने संदूक खोलकर एक चमकती-सी चीज़ निकाली, "तेरे दादा ने यह कंगन मुझे इसी दिन के लिए पहनाया था।" उनका गला भर आया, "मैंने इसे पहना नहीं, इसे सहेजकर रखती आई हूँ। यह उनके वंश की निशानी है।" उन्होंने आँसू पोंछकर कहा, "पुराने लोग आगा-पीछा सब सोच लेते थे, बेटा।"

सचमुच मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं।
धुँधली छाया विलीन हो गई। मैंने देखा।
काफ़ी चढ़ आया है। पास के
खजूर के पेड़ से उड़
एक कौआ अपनी चि
काली पाँखें फैला
मेरी खिड़की पर
गया। हाथ में अब
किशन भैया का
काँप रहा है। क

चींटियों-सी कतारें धूमिल हो रही हैं। आँखों पर विश्वास नहीं होता। मन बार-
अपने से ही पूछ बैठता है–'क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?'

□ शिवप्रसाद

अपना-अभ्यास

कहानी से

1. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-कि बातों की याद आ जाती है?
2. दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई थ
3. दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्य

कहानी से आगे

1. आपने इस कहानी में महीनों के नाम पढ़े, जैसे–क्वार, आषाढ़, माघ। इन महीनों में मौसम कैसा रहता है, लिखिए।

2. 'अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं'–लेखक के इस कथन के अनुसार यह बताइए कि किस मौसम में कौन-कौन सी चीजें विशेष रूप से मिलती हैं?

अनुमान और कल्पना

1. इस कहानी में कई बार ऋण लेने की बात आपने पढ़ी। अनुमान लगाइए, किन-किन पारिवारिक परिस्थितियों में गाँव के लोगों को ऋण लेना पड़ता होगा और यह उन्हें कहाँ से मिलता होगा? बड़ों से बातचीत कर इस विषय में लिखिए।
2. घर पर होनेवाले उत्सवों / समारोहों में बच्चे क्या-क्या करते हैं? अपने और अपने मित्रों के अनुभवों के आधार पर लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे दी गई पंक्तियों पर ध्यान दीजिए–

> ज़रा-सी कठिनाई पड़ते
> अनमना-सा हो जाता है
> सन-से सफ़ेद

- समानता का बोध कराने के लिए सा, सी, से का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पाँच और शब्द लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

2. कहानी में 'छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं, पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं'–जैसे वाक्य आए हैं। किसी क्रिया को ज़ोर देकर कहने के लिए एक से अधिक बार एक ही शब्द का प्रयोग होता है। जैसे वहाँ जा-जाकर थक गया, उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़कर देख लिया। इस प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।
3. बोलचाल में प्रयोग होनेवाले शब्द और वाक्यांश 'दादी माँ' कहानी में हैं। इन शब्दों और वाक्यांशों से पता चलता है कि यह कहानी किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित है। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों में क्षेत्रीय बोलचाल की खूबियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए–निकसार, बरह्मा, उरिन, चिउड़ा, छौंका इत्यादि शब्दों को देखा जा सकता है। इन शब्दों का उच्चारण अन्य क्षेत्रीय बोलियों में अलग ढंग से हो है, जैसे–चिउड़ा को चिड़वा, चूड़त्र, पोहा और इसी तरह छौंका को छौंक, तड़क भी कहा जाता है। निकसार, उरिन और बरह्मा शब्द क्रमशः निकास, उऋण और ब्रह्मा शब्द का क्षेत्रीय रूप हैं। इस प्रकार के दस शब्दों को बोलचाल में उपयो होनेवाली भाषा / बोली से एकत्र कीजिए और कक्षा में लिखकर दिखाइए।

हिमालय की बेटियाँ 3

अभी तक मैंने उन्हें दूर से देखा था। बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थीं। संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं। उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे। माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं। मैं हैरान था कि यही दुबली-पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलुज समतल मैदानों में उतरकर विशाल कैसे हो जाती हैं! इनका उछलना और कूदना,

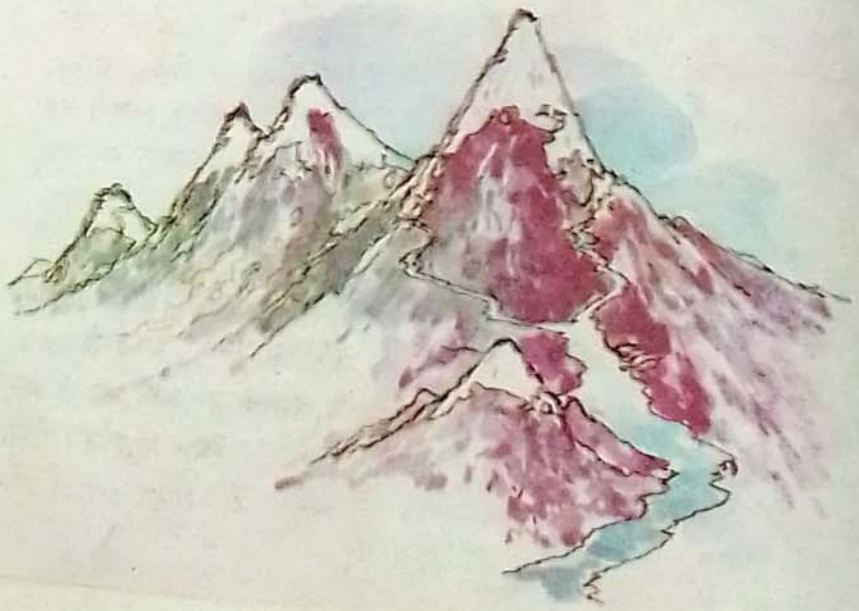

खिलखिलाकर लगातार हँसते जाना, इनकी यह भाव-भंगी, इनका यह उल्लास कहाँ गायब हो जाता है मैदान में जाकर? किसी लड़की को जब मैं देखता हूँ, किसी कली पर जब मेरा ध्यान अटक जाता है, तब भी इतना कौतूहल और विस्मय नहीं होता, जितना कि इन बेटियों की बाललीला देखकर!

कहाँ ये भागी जा रही हैं? वह कौन लक्ष्य है जिसने इन्हें बेचैन कर रखा है? अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी अगर इनका हृदय अतृप्त ही है तो वह कौन होगा जो इनकी प्यास मिटा सकेगा! बरफ़ जली नंगी पहाड़ियाँ, छोटे-छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बंधुर अधित्यकाएँ, सरसब्ज उपत्यकाएँ—ऐसा है इनका लीला निकेतन! खेलते-खेलते जब ये ज़रा दूर निकल जाती हैं तो देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफ़ेदा, कैल के जंगलों में पहुँचकर शायद इन्हें बीती बातें याद करने का मौका मिल जाता होगा। कौन जाने, बुड्ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा! बड़ी-बड़ी चोटियों से जाकर पूछिए तो उत्तर में विराट मौन के सिवाय उनके पास और रखा ही क्या है?

सिंधु और ब्रह्मपुत्र—ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास, चनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र स्वयं कुछ नहीं हैं। दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा हो-होकर इन दो महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। कितना सौभाग्यशाली है वह समुद्र जिसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला!

जिन्होंने मैदानों में ही इन नदियों को देखा होगा, उनके खयाल में शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं। माँ-बाप की गोद में नंग-धड़ंग होकर खेलनेवाली इन बालिकाओं का रूप पहाड़ी आदमियों के लिए आकर्षक भले न हो, लेकिन मुझे तो ऐसा लुभावना प्रतीत हुआ वह रूप कि हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती है।

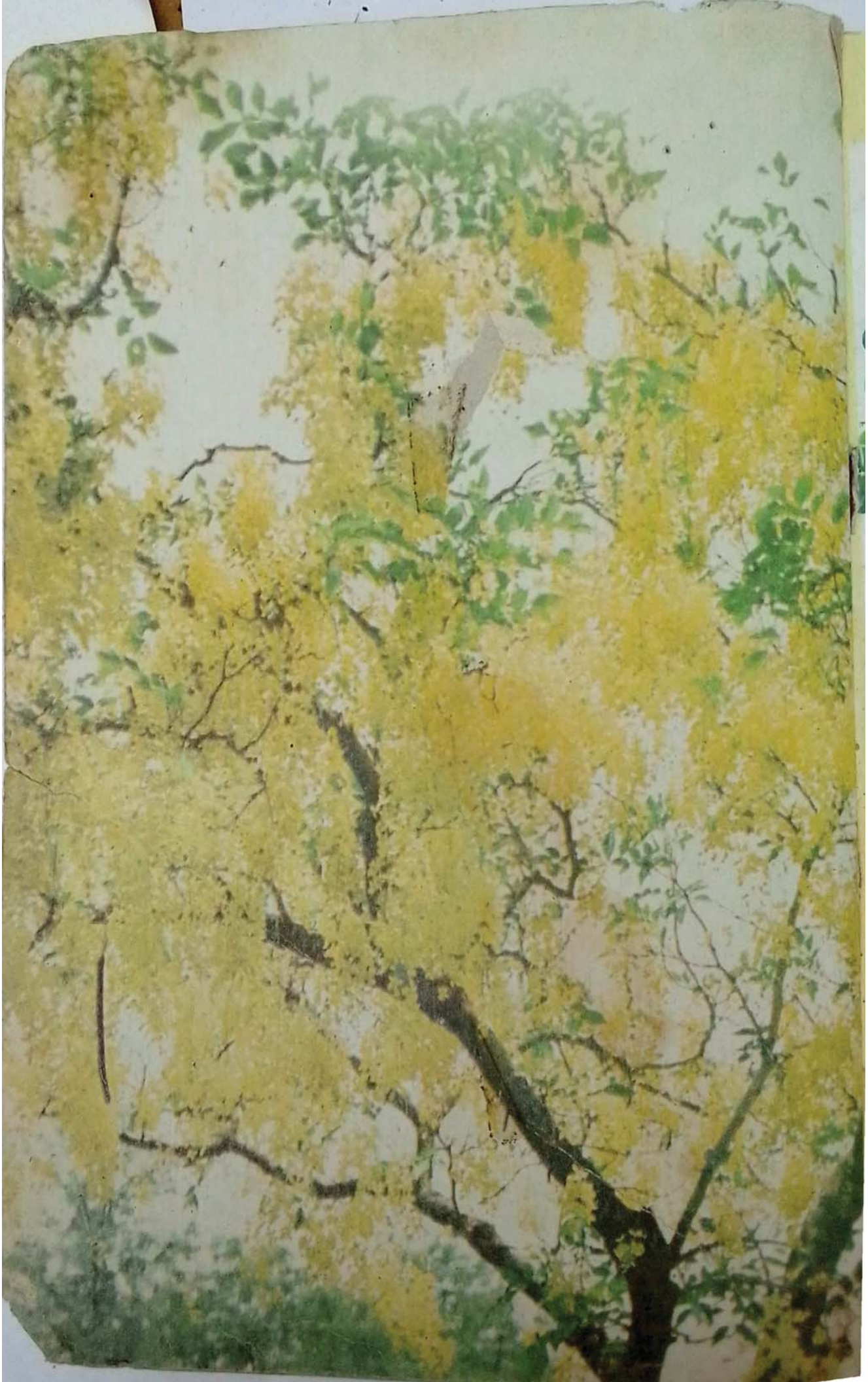

750

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-704-3